International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-6 Nov-Dec-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

बाल्मीकि रामायण के सांस्कृतिक महत्व का एक अध्ययन

अस्सिटेंन्ट प्रोफेसर, राकेश कुमार,

विषय संस्कृत (विद्या संबल योजना)

M.A.J College Deeg Rajasthan

साराश, बाल्मीकि कृत रामायण भारतीय संस्कृत साहित्य का वह अद्भुत और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जिससे लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रारम्भ माना जा सकता है। यह अत्यन्त ही आदिकाव्य है क्योंकि इसमें अलंकृत शैली में महाकाव्य के तत्त्वों के अनुरूप कविता है। यह बाल्मीकि रामायण सात काण्डों में विभक्त है, बाल काण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तर काण्ड। प्रत्येक काण्ड सर्गों में बटा हुआ है। सर्गों में रामणीय संस्कृत पद्य में हैं। जो अनुष्टुप, उपजाति, वंशस्थ आदि सुन्दर छन्दों से जुड़े हुये हैं। सर्वाधिक संख्या अनुष्टुप छन्दों की है जिन्हें श्लोक भी कहा जाता है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में 24 हजार पद्य या श्लोक है, इसलिए इसे हजार .ते वाटमार "चतुर्विंशति साहस्री संहिता" कहते हैं।वाल्मीकि रामायण में मनुष्य जीवन के सभी विवेचन विस्तार से पक्षों का विश्लेषण और विवेचन विस्तार से किया गया है। दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में इस बाल्मीकि रामायण की कथा विभिन्न रूपों में प्रचलित है और वहाँ नियमित रूप से राम कथा के प्रबचन होते रहते हैं। इससे बाल्मीकि रामायण के महत्व्‌ का पता चलता है।

मुख्य शब्द, बाल काण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड आदि।

प्रस्तावना, भारतीय साहित्य में हिन्दी में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी का रामचरितमानस इसका मूल स्रोत बाल्मीकि रामायण ही है। प्रत्येक देशी या विदेशी भाषाओंमें कवियों तथा लेखकों ने या तो बाल्मीकि रामायण के अनुवादकिये हैं या अपनी भावना से रूपान्तरित महाकाव्यों की रचना की है। इनमें तमिल की कम्ब रामायण और बंगला की कृत्रिवास रामायण बहुत ही महत्वपूर्ण है। बाल्मीकि रामायण के इस सर्वदिक प्रचार प्रसार से रामायण के निम्नलिखित श्लोकों में अभिव्यक्त भावना चरितार्थ होती है।[1]

यावत स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।

तवद्रामायण कथा लोकेषु प्रचरिण्यति।।

वा. रा0 1.2.36

अर्थात् जब तक इस पृथ्वी पर पर्वत और नदियाँ रहेगी तब तक बाल्मीकि रामायण की कथा का प्रचार होगा। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं,।[1] महावीर हैं, प्रजा के रक्षक हैं, वेद वेदाड्ग के तत्त्वों को जानने वाले तथा सर्वजन प्रिय राजा है, हिमालय के समान स्थिर और समुद्र के समान गम्भीर हैं। समुद्र इव गाम्भीर्ये स्थैर्ये च हिमवानिय यह वीरता

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-6 Nov-Dec-2024 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

में विष्णु के समान है विष्णुना सदृशो वीर्य प्रजा के कल्याण के लिये सब कुछ करने को तैयार है, समापना करना सबसे पूर्ण कर्म माना जाता इसीलिए भारत में आज भी राम राज्य की स्थापना करना सबसे पूर्ण कर्म माना जाता है।[2]

बाल्मीकीय रामायण के संस्करण (विभिन्न पाठ)

बाल्मीकि रामायण का पाठ एक रूप नहीं है आजकल इस रामायण के तीन पाठ प्रचलित है।

दाक्षिणात्य पाठ

गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई) निर्णय सागर प्रेस (बम्बई) तथा दक्षिण के संस्करण। यह पाठ अपेक्षा कृत अधिक प्रचलित और व्यापक है।

गौड़ीय पाठ

इस संस्करण का प्रकाशन इटली के विद्वान जी० गोरेशियों ने 1843 ई० तक कई खण्डों में किया था इटैलियन भाषा में इसका अनुवाद (1847—58) में किया गया था इसी का फ्रेंच अनुवाद 1854—58 ई०में प्रकाशित हुआ। अंग्रेजी अनुवाद मन्मथनाथ गुप्त द्वारा कलकत्ता से 1992—94 ई० एवं अंग्रेजी पद्य में आर० टी० एच० ग्रिफिथ द्वारा अनुवाद पांच खण्डों में 1870—74 में प्रकाशित हुआ था। ग्रिफिथ का अनुवाद बम्बई संस्करण पर आश्रित है।[3]

पश्चिमोत्तरीय पाठ

यह संस्करण डी० ए० वी० कालेज लाहौर के अनुसंधान विभाग रिसर्च डिपार्टमेंट से 1923 ई० में प्रकाशित हुआ था। इसमें कटक की टीका भी दी गयी है। इन प्रत्येक पाठो मे बहुत से श्लोक ऐसे मिलते हैं जो अन्य पाठों में नहीं पाये जाते दक्षिणात्य तथा गौड़ीय पाठों की तुलना करने पर यह देखा जाता है कि प्रत्येक पाठ में श्लोकों की एक तिहाई संख्या केवल एक ही पाठ में मिलती है। इसके अतिरिक्त जो श्लोक तीनों पाठों में पाये जाते है, उनका पाठ भी एक नहीं है और इनका क्रम भी बहुत स्थलों पर भिन्न है।[4] रामायण के प्रारम्भ में कथानक के दृष्टि कोणों से तीनों पाठों की कथा वस्तु में जो अन्तर पाये जाते है वह गौण है। फादर कामिल बुल्के ने तीनों पाठों की तुलना करके यह निष्कर्ष निकाला है कि उत्तर काण्ड की रचना बहुत बाद में हुई थी। दक्षिणात्य पाठ के उत्तरकाण्ड में सीता त्याग का कारण यह बताया जाता है कि भृगु ने अपनी पत्नी की हत्या के कारण विष्णु को श्राप दिया था। यदि उत्तरकाण्ड प्रारम्भ से रामायण का एक अंग होता तो अन्य काण्डों की तरह इस काण्ड के तीनों पाठों में भी अन्तर पाये जाते। प्रस्तुत पद्यांश में तीनों पाठों की प्राचीनतम् हस्त लिखित प्रतियों के आधार पर बड़ौदा विश्वविद्यालय (ओरिण्टल इन्स्टियूट) द्वारा रामायण का एक वैज्ञानिक संस्करण सन् 1960 ई0 में प्रकाशित हो रहा है। वह अब तक समाप्त नहीं है।[5]

बाल्मीकि रामायण की विषय वस्तु बाल्मीकि रामायण में एक पूरे युग की संस्कृति, समाज, परिवार, राजनीति और उनसे सम्बद्ध सभी भावनाओं का चित्रण हुआ है। ऐसा होते हुए भी करुण रस ही बाल्मीकि रामायण का प्रधान रस है। बाल्मीकि रामायण में वर्णित कथा के अनुसार महर्षि बाल्मीकि तमसा नदी के किनारे विचरण कर रहे थे तभी उन्होंने देखा कि एक आखेटक ने दूर से वाण मारकर क्रोच पक्षियों के जोड़े में से एक कामासक्त नर क्रौच को मार गिराया।

वृक्ष की शाखा पर बैठी हुई मादा क्रौची विलाप करने लगी। इस करुण दृश्य को देखकर वाल्मीकि का भावनावेश हृदय द्रवित हो गया और भावावेश में उन्होंने आखेटक (बहेलिये) को शाप दे डाला कि तुमने जो कामासक्त क्रौच युगल में से एक को मार दिया है, इसलिए तुम सदा सदा के लिए प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होगें औरयुगो युगो ंतक तुम्हारी निन्दा होती रहेगी।[6]

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।।

यत्क्रौ च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

वा0रा0 1.2.15

इसके पश्चात् वाल्मीकि चिन्तामग्न होकर सोचने लगे, सोचतेसोचते उनको ध्यान आया कि यह जो मैने शाप दिया है, यह चरणों में तथा प्रत्येक चरण में समान संख्या के अक्षरों वाला वीणा की लय से युक्त शोक से विहवल मेरे मुख से निकला हुआ श्लोक ही है–

पादबद्धोऽक्षरसमस्तन्त्रीयसमन्वितः।'

शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।।

वा0रा0 1.2.18

इस प्रकार बाल्मीकि रामायण का प्रारम्भ इस करुण घटना से होता है। दूसरे शब्दों में कहा गया है कि शोक ही श्लोक (काव्य) बन गया (**शोकः श्लोकत्वमागतः**)।[7] राम का वर्णन बाल्मीकि नारद से पहले ही सुन चुके थे। इस वर्णन से प्रेरित होकर उन्होंने यह कथा लिखनी प्रारम्भ कर दी। इससे प्रमाणित होता है कि सत्य अर्थों में नारद जी रामायण के रचिता माने जा सकते है। वास्तव में बाल्मीकि के मन में किसी महापुरुष का पूर्ण चरित वर्णन माने जा सकते करने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। बाल्मीकि, नारद मुनि के पास गये और उनके किसी गुणवान् महाबली, धर्मश, कृतज्ञ, सत्यवादी इत्यादि गुणों से युक्त महापुरुष के विषय में पूछा, नारदजी ने इन सब सामान्य जनों में दुर्लभ गुणों से युक्त इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न सर्वप्रसिद्ध राजा राम का नाम बताया और राम के सभी गुणों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। क्रौच वध की घटना के पश्चात् अपने द्वारा उच्चरित श्लोक के विषय में जब राजा बाल्मीकि चिन्ता मग्न थे, तो ब्रह्मा ने आकर उन्हें बताया कि निश्चित रूप से तुमने श्लोक की रचना की है। क्रौच वध से दुःखी बाल्मीकि के मन की पीड़ा ही श्लोक के रूप में प्रकट हो गइ।[8]

"शोकः श्लोकत्वमागतः।"

सम्भवतया इसी सन्दर्भो से प्रेरित होकर हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सुमित्रा नन्दनपंत ने यह लिखा–

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान"

ब्रह्मा जी ने बाल्मीकि से कहा कि राम का आख्यान इसी रूप मेंवर्णित करें–

सर्वविदितं ते भविष्यति

तब बाल्मीकि ने समाधि में स्थिति होकर राम और सीता से सम्बद्ध सभी वृतान्तों का साक्षात्कार किया (वा० रा० सर्ग० 3) उन्होने पाँच सौ सगों में 6 काण्डो के साथ उत्तर काण्ड को मिलाकर राम चरित की रचना की बाद में वाल्मीकि ने सीता के पुत्रों कुश और लव को इसे कण्ठस्थ कर दिया, जो इसका यशो गानकरने लगे, उनका गान इतना मधुर होता था कि सुनने वाले लोग बीती घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव करनें लगते थे।[9] कुश और लव के कथा गान से अर्थ विकृत होकर ''कुशीलव'' शब्द कथा गायक के अर्थ में रूढ़ हो गया। अयोध्या नरेश राम ने भी इन भाईयों का गान सभा में सुना। रामायण में राम कथा पंचम सर्ग से प्रारम्भ होती है।

रामायण सात काण्डों में विभक्त है।

बाल काण्ड (77 सर्ग) –इस काण्ड में 77 सर्ग है। बाल काण्ड में एकएक विषय के सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में विस्तृत वर्णन करते हुए क्रमशः अयोध्या में दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान से शुरू होकर सीता के विवाह का विस्तृत वर्णन 5 मिलता एवं परशुराम का गर्व दूर होने तक का वर्णन मिलता है।

अयोध्या काण्ड (119 सर्ग)इसमें 119 सर्ग है। अयोग्य काण्ड में अयोध्या के राजप्रासाद की घटनाओं से शुरू होकर राम के चित्रकूट मिलता लता छोड़कर दण्डकारण्य में प्रवेश तक का वर्णन मिलता है।[10]

अरण्य काण्ड (75 सर्ग) –अरण्य काण्ड में कुल 75 सर्ग है यह काण्ड राम, लक्ष्मण, सीता का अण्डकारण्य में निवास से शुरू होता है तथा काण्ड का अन्त राम के पम्पासरोवर दर्शन से होता है।

किष्किन्धाकाण्ड (सर्ग 67)इस काण्ड में कुल 67 सर्ग है जिसकी शुरूआत वसन्त ऋतु की छटा को देखकर राम का सीता के वियोग में दुःखी होना, जाम्बन्त द्वारा हनुमान् को उद्बोधन एवं हनुमान् का सागर लंघन के लिए प्रवृत्त होना, यह सार रूप में उल्लेखित है।[11]

सुन्दर काण्ड (68 सर्ग) इस काण्ड में 68 सर्ग है। इस काण्ड में हनुमान् द्वारा सागर पार करके अनेक विघ्नों को दूर करते हुए लंका में प्रवेश से शुरू होकर राम को हनुमान् द्वारा सीता को चूड़ामणि देना तथा उनका वृत्तान्त सुनाना यह व्याख्यायित करता है। कि इस काण्ड को सुन्दर कहे जाने का कारण नायक और नायिका दोनों को संकट के विषम काल में शुभ समाचार प्राप्त होना है। हनुमान् इस काण्ड के नायक भी हैं, जिनका एक नाम सुन्दर भी है।

युद्ध काण्ड (128 सर्ग) युद्ध काण्ड में कुल 128 सर्ग हैं। इस काण्ड में राम और लंका के राजारावण के युद्ध का वर्णन, राम का अयोध्या लौटना एवं राम राज्याभिषेक और प्रजा पालन यह वृन्तान्त अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

उत्तर काण्ड (111 सर्ग)इस काण्ड में 111 सर्ग जुड़े हुए है, इस काण्ड में बाल काण्ड के समान अनेक इतिहास, पुराणात्मक आख्यान से लेकर कुशलव के राज्याभिषेक के बाद राम का महाप्रस्थान (विष्णु के तेज से मिल जाना) इन सब वृतान्तों के बाद अन्तिम सर्ग में वाल्मीकि रामायण का पाठफल कहा गया है। इस प्रकार रामायण में 645 कुल सर्ग है।

बाल्मीकि रामायण का रचना काल, यह कहना कठिन है कि रामायण की रचना किस युग में हुई है। इस सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा अनेक मतों का प्रतिपादन किया गया है। भारतीय विद्वानों द्वारा रामायण को त्रेता युग की रचना मानते

हैं, जो लगभग 86, 6100 ई० पूर्व की है। किन्तु यह समय अति प्राचीन है, और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है इनके निर्धारण में संदेह है। तिलक महोदय ने ज्योतिष गणना के आधारों पर अनेक तर्कों सहित रामायण का समय 10000 से 8000 ई० पू० सिद्ध करने का प्रयत्न किया है जो गोरेसिया ने इसका रचना काल 1200 ई० पू0 निर्धारित किया है।श्लेगल ने 1100 ई०पू० याकोबी 8000 ई० पू० से 5000 ई०पू० कामिल बुल्के 200 ई०पू० तथा कीथ, 600 ई०पू० काशी प्रसाद जायसवाल 500 ई पू०व भगवत शरण उपाध्याय के अनुसार 1750 ई0पू0 मानते है।

उपर्युक्त विभिन्न मत–मतान्तरों की समीक्षा करने पर मुख्य रूप से दो मत सामने आते है प्रथम तो यह है कि रामायण का प्रणयन महाभारत एवं पाणिनि युग से भी पूर्व 600 ई० पू० में हुआ था, अतः मैं एक शोधार्थी के रूप में इन विभिन्न मतोंमें न उलझकर, स्वयं बाल्मीकि रामायण में निहित अन्तः साक्ष्यों के आधार पर उसका रचना काल, निर्धारित करने का प्रयत्न करेगें। बाल्मीकि रामायण की सर्जना निश्चित रूप से बौद्ध युग से पूर्व नही हुई क्योंकि इसमें भगवान् बुद्ध और बौद्ध धर्म का प्रभाव सदा अलक्षित है एक स्थान पर बुद्ध का नाम अवश्य चोर तथा नास्तिक बताया गया है किन्तु स्पष्ट यह है कि यह श्लोक उस समय जोड़ा गया, जब भगवान बुद्ध के प्रति कुत्सित भावना लोगों में जन्म ले चुकी थी और वह बौद्ध धर्म को अस्वीकार करने लगे थे। रामायण में कोशल जनपद की राजधानी का अध्याय एक में वर्णित है। जब तक कि जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में अयोध्या को साकेत कहा गया है, लव के लिए भी श्री राम ने श्रावस्तीपुरी बसायी। अपनी राजधानी श्रीवस्ती में बुद्ध युग में कोसल के राजा प्रसेनजीत श्रावस्ती में ही राज्य करते थे किन्तु बाल्मीकि रामायण में कोशल की राजधानी अयोध्या ही है। अतः बाल्मीकि रामायण की रचना उस समय हुई, जब अयोध्या को छोड़कर श्रावस्ती में राजधानी स्थान्तरित नही हुई थी। अन्तः बाल्मीकि रामायण की रचना बौद्ध एवं जैन युग से पूर्व हुई प्रतीत होती है।इस प्रकार दिये गये उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि बाल्मीकि रामायण की रचना निश्चित रूप से बौद्ध युग से पूर्व हुई है। गम्भीरता से विचार करने पर बाल्मीकि रामायण में चैत्य विशेष प्रकार के बौद्ध मन्दिरों तथा भद्रते (भन्ते) आदर सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है, किन्तु इसके विपक्ष में यह कहा जा सकता है कि बहुत सम्भव है कि यह शब्द इसी अर्थ में बाल्मीकि से भी पूर्व प्रचलित हो रहे हो, जिसका प्रयोग बाल्मीकि ने किया और बौद्धों ने रामायण से इन्हें ग्रहण कर लिया है ऐसा सोचा जा सकता है, परन्तु यह सत्य है या नहीं इस परविस्तृत शोध करने की आवश्कता है। डा० देवर ने बाल्मीकि रामायण पर यूनानी सभ्यता का प्रभाव मानकर बाल्मीकि रामायण का समय यूनानियों के आगमन के बाद लगभग दूसरी शताब्दी माना जाता है। कुछ विद्वानों ने बाल्मीकि रामायण को महाभारत युगीन कहा है, किन्तु यदिमहाभारत तथा बाल्मीकि रामायण में राम का विष्णु या नारायण के अवतार रूप में कहीं भी वर्णन नहीं मिलता है।बाल्मीकि रामायण में कही भी महाभारत का उल्लेख नहीं आया है, जबकि महाभारत में अनेक स्थलों पर वाल्मीकि रामायण के पात्रों तथा बाल्मीकि का उल्लेख हुआ है। इससे भी यह सिद्ध होता है कि महाभारत से पूर्व बाल्मीकि रामायण का निर्माण हो गया था। क्योंकि बाल्मीकि रामायण की सभ्यता और अपेक्षाकृत अधिक शान्त, व्यवस्थित, सुसंस्कृत और नैतिकता से परिपूर्ण है,जबकि महाभारत कालीन सभ्यता निश्चित रूप से अशान्तिमय, अव्यवस्थित एवं नैतिक गुणों में अस्त व्यस्त रहती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग परिचायक है, अत एव यह कहना कि राम के उदात्त आदर्श नैतिक गुण वाद में शिथिल पड़ गये, कुछ विचित्र सा लगता है। अतः इस आधार पर वाल्मीकि रामायण को महाभारत के पश्चात्‌ वर्ती कदापि नहीं माना

जा सकता, दूसरी बात है कि बाल्मीकि रामायण एक युग का एक कवि द्वारा रचित एक विशाल महाकाव्य है, जबकि महाभारत अनेकों द्वारा रचित एक महान् ग्रन्थ संग्रह है। इसका सम्पादन भी एकाधिक बार हुआ है। अत उसमे एक व्यक्तित्व काल ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण युग का सांस्कृतिक परिवेश अत्यन्त सजीव रूप में प्रकट होता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है। वेदव्यास द्वारा चरित महाभारत में भाषा की विभिन्नता तथा शैली का जैसा परिष्कृत रूप परिलक्षित होता है, बाल्मीकि रामायण में वैसा नही दिखता इसीलिए यह दृढ़ता पूर्वक कहा जासकता है कि रामायण की रचना निश्चित रूप से महाभारत युग से पूर्व हुई।

वाल्मीकि रामायण के आधार पर समय का निर्धारण, बाल्मीकि रामायण से पूर्व वैदिक साहित्य का मंचन करने पर हमें सर्वज्ञ रामकथा का अभाव लक्षित होता है, किन्तु रामकथा के अनेक पात्रों का उल्लेख अवश्य प्राप्त होता है। इक्ष्वाकु दशरथ राम, अश्वपति, कैकेयी, जनक और सीता आदि के नाम वैदिक वाङ्‌ग्मय में अनेक बार प्रयुक्त हुए है, किन्तु यह सभी पात्र राम कथा के पात्र के रूप में नहीं अपितु स्वतंत्र संज्ञा के रूप में अन्य सन्दर्भ में ही प्रस्तुत हुए हैं। वैदिक साहित्य से इन नामों का ज्यादा लेना देना नहीं है। ऋग्वेद तथा अर्थववेद में इक्ष्वाकु का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ राम के पूर्वज के रूप में न होकर एक राजा अथवा कोई प्राचीन वीर पुरुष के रूप में मिलता है। 'दशरथ' संज्ञा मध्य एशिया में निवास करने वाली चिन्तेणि नाम, आर्य जाति के राजा, जिसका शासन काल 1400 ई० पू० माना जाता है के रूप में प्रयुक्त हुआ है। 'दशरथ' का अर्थराम नहीं, कामिल बुल्के ने वेदों में प्रयुक्त 'रामे संज्ञा की पर्यालोचना करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में कहा है कि वैदिक काल से राजाओं और ब्राह्मणों दोनों में राम नाम प्रचलित था। जनक' का नाम भी वैदिक साहित्य में अनेकशः प्रयुक्त हुआ है। विद्वानों ने वैदिक जनक तथा रामायण के जनक को एक सिद्ध करने का प्रयास किया है। यद्यपि इन स्थलों पर कहीं भी यह संकेत नहीं मिलता किसीता जनक की पुत्री हैं और राम उनके जामाता (दामाद) हैं। ऋग्वेद में तो गंगा का नाम ही एकया दो बार ही दिखाई देता है जबकि गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले राम के पूर्वज का कोई उल्लेख ऋग्वेद में नहीं मिलता इससे प्रमाणित होता ही है कि बाल्मीकि रामायण वैदिक पीरियड के बाद की रचना है विष्णु पुराण वायु पुराण ब्रह्ममापुराण पद्मपुराण आदि से सीता के पिता का नाम सीरव्यज बताया गया है और इसी से मिलते जुलते नाम कुशध्वज का जनक के भ्राता के रूप में वाल्मीकि रामायण में उल्लेख किया गया है।कालान्तर में बाल्मीकि ने यह संज्ञा ग्रहण कर कथा को आवश्यकतानुसार उसे बाल्मीकि रामायण में स्थान दिया है। कामिल बुल्के के अनुसार मिथिला का कोई भी राजा जनक के नाम से पुकारा जा सकता था। वैदिक साहित्य में 'सीता' के अनेक व्यक्तित्वों की सूचना मिलती है। वैदिक सीता के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह शब्द खेत में हल से बनायी हुई रेखा का पर्याय है।सीता खेत की सिरो (हलरेखा) का नाम था जिसका समर्थन महाभारत से भी होता है। द्रोण पर्व में जयद्रथ वध के अन्तर्गत ध्वज वर्णन नामक अध्याय में सीता का कृषि की अधिष्ठात्री देवी एवं सभी वस्तुओं की उत्पादि के रूपों में वर्णन किया गया है। हरिवंश पुराण के द्वितीय भाग में दुर्गा देवी की एक दीर्घ कथा वर्णित है, जहाँ देवी की स्तुति में कहा गया है कि तू किसानों के लिए सीता है, तथा प्राणियों के लिए धरणी है। इस प्रकार वैदिक साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उसमें कहीं भी रामकथा का उल्लेख नहीं हुआ है अतः इससे यह निश्चित होता है कि बाल्मीकि रामायण की रचना वैदिक युग के बाद हुई है। बाल्मीकि रामायण के बाद मुख्य रूप से महाभारत बौद्ध जैन साहित्य हैं। जैन साहित्य में भी हमें

रामकथा के पात्रों की व्याख्या प्राप्त होती है। जिसके आधार पर इतिहासकारों ने रामकथा का मूल स्रोत ढूढ़ने का प्रयत्न कथा किया है। दिनेश चन्द्र सेन का भी मत है कि रावण सम्बन्धी उपाख्यान स्वतंत्र रूप से रामकथा से पूर्व प्रचलित थे। जैन रामकथा में राक्षसवंश तथा वानर वंश का विस्तृत वर्णन मिलता राम, है, जिसमें इस बात की धारणा बनती है कि राम की अपेक्षा वानर अधिक प्रचलित थे। लंकावतारसूत्रम् में लंका के रावण तथा बुद्ध के धर्म के विषय में संवादमिलता है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि रावण रामकथा की उत्पत्तिसे पूर्व विख्यात हो चुका था।कुछ विद्वानों ने रामकथा का स्रोत होमर के 'इलियट' काव्य में ढूढ़ने का प्रयास किया है, बाल्मीकि और होमर की रचना में साम्य मिलता है।भाषा के आधार पर बाल्मीकि रामायण का समय यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि आदि कवि बाल्मीकि का रामायण लौकिक संस्कृत का प्रथम महाकाव्य है। बाल्मीकि रामायण की भाषिक मौखिक समीक्षा से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि यह महाकाव्य उस युग में लिखा गया, जब वैदिक भाषा का युग समाप्त हो रहा था। जिस समय बाल्मीकि रामायण का प्रणयन हुआ उस समय भी बाल्मीकि रामायण में भाषा के कई स्तर विद्यमान थे।

निष्कर्ष, संस्कृत एक उच्चतम् श्रेणी के विद्वानों या द्विजों की भाषा थी। सम्भवतः द्विजों की यह भाषा साहित्यिक दृष्टि कोण से उच्चतम् श्रेणी की और व्याकरणिक दृष्टिकोण से अत्यन्त परिपक्व भाषा थी। वैदिक युग में पठन पाठन की भाषा ही वैदिक भाषा थी। यह भाषा व्याकरण सम्मत उच्च भाषा थी बाल्मीकि रामायण के जितने उच्च श्रेणी के विद्वान और वह शिक्षित पात्र हैं, वह सभी इस द्विज भाषा या वैदिक या, छान्दस को जानते थे ।हनुमान स्वयंद्विज की इसी भाषा में राम से वार्तालाप करते हैं हनुमान के शुद्ध व्याकरण सम्मत भाषा को सुनकर राम लक्ष्मण उनके भाषा सम्बन्धी ज्ञान की प्रशंसा करते हैं। इस प्रकार यह भाषा वैदिक भाषा या द्विजों की भाषा रही होगी उस युग की भाषा का दूसरा स्तर मध्यम श्रेणी या जनसामान्य की भाषा रही होगी। इसी भाषा में सामान्य जन तथा मध्यम श्रेणी के लोग अपने जीवन का निर्वाह करते थे, उसे बाल्मीकि रामायण में मानुषी भाषा कहा गया है। मुनियों या मानवों की भाषा तत्कालिक युग की लौकिक संस्कृत थी, यह लौकिक संस्कृत भी व्याकरण के नियमों से सुव्यवस्थित हो गयी थी। काव्य की रचना धीरे–धीरे इसमें आरम्भ हो रही थी, बाल्मीकि रामायण में स्वयं मनुष्यों की इस भाषा के प्रमाण मिलते हैं। इस युग की भाषा का तीसरा तथा अति साधारण स्तर लोक में प्रचलित लौकिक संस्कृत का यह रूप था, जो अति क्षेत्रीय एवं अति स्थानीय था, जिसे मध्यम श्रेणी से भी नीचे के लोग बोलते एवं समझते थे। दक्षिण में रहने वाले वानरजाति के लोग सम्भवतः आपस में इसी प्रकार की क्षेत्रीय बोली का प्रयोग करते हैं।इन पर्याप्त साक्ष्यों के समुचित अवलोकन के द्वारा यह कहा जा सकता है कि बाल्मीकि रामायण की रचना की अंतिम सीमा 500 ई० पू० है। क्योंकि पाणिनी की अष्टाध्यायी शब्द कोश में जनक कौशल्या, कैकेयी, भरत, विभीषण, रावण आदि शब्द प्राप्त होते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बाल्मीकि रामायण की रचना पाणिनि से पूर्व हो चुकी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 यह मान्यता है कि गायत्री मंत्र (24 अक्षर के एक एक वर्ण से रामायन की श्लोक साहसी आरम्भ होती है। इस प्रकार की रामायण गायत्री–मंत्र की पखनता से सम्पन्न है।

2 विन्टर निट्ज –प्राचीन भारतीय साहित्य (हिन्दी अनुवाद)भाग–1, खण्ड–2, पृष्ट 153 पादटिप्पणी–1

3 द0 एच0 या कोबीः दास रामायण, पृ0 3 वा0रा0 1/4/2[1]बहादुर के0एस0 रामास्वामी – दि कम्पोजीशन एण्ड डेट आफ दि रामायण, पृ0 3

4 गौरसिया रामाया के भूमिका में

5 जर्मन ओरियण्टल जर्नल, भाग 3, पृ0 369

6 वा0 रा0 पृ0 101

7 कामिल बुल्के रामकथा पृ0 101 से ओ पृ0सं0

8 हिस्ट्री आफ लिटरेचर, पृ0 306–309

9 जे0बो0 ओ0 आर0 एस0 भाग 4, पृ0 262

10 यथाहि चोरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिक न विद्धि बाल्मीकि रामायण

11 श्रावस्तीतिपुरी रभ्या श्रविता च लवस्म चं, वा0 रा0 उ0 का0 108/5